पाठ-20

युद्ध-गीता

आइए, सीखे - ● रसानुभूति ● नैतिकता और सदाचार के गुणों का विकास करना। ● उपसर्ग, विपरीतार्थी शब्द, विराम चिह्नों का प्रयोग ● समास, विग्रह और उसकी पहचान करना। ● दोहा-चौपाई और अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा तथा रूपक अलंकार जानना।

*(**पाठ परिचय**-राम को केन्द्र में रखकर अनेक ग्रंथ लिखे गए। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर कालिदास और भवभूति से होती हुई यह परम्परा तुलसीदास तक अक्षुण्ण रही। उसके संदर्भ में भूत, भविष्य और वर्तमान आदि की तथा देशकाल की सब सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। लंका के युद्ध क्षेत्र में रावण श्रीराम से युद्ध करने के लिए अपने रथ पर आरूढ़ होकर आता है। उसकी सेना विशाल है। उसके साधन तथा युद्ध की तैयारी भी विशाल है। विभीषण उस दृश्य को देखकर हृदय में आतंकित हो जाता है और सोचता है - ''क्या बिना साधनों के राम, रावण को पराजित कर सकेंगे?'' वे अपना संशय राम के सम्मुख रख देते हैं। तब जिस तरह महाभारत युद्ध के आरंभ में श्रीकृष्ण अर्जुन की शंकाओं का समाधान करने तथा मनोबल बढ़ाने के लिए गीता का उपदेश देते हैं, उसी तरह रामचरित मानस में भी युध्द के समय श्रीराम विभीषण की आशंकाओं का समाधान करते हुए धर्म के उन आधार भूत*

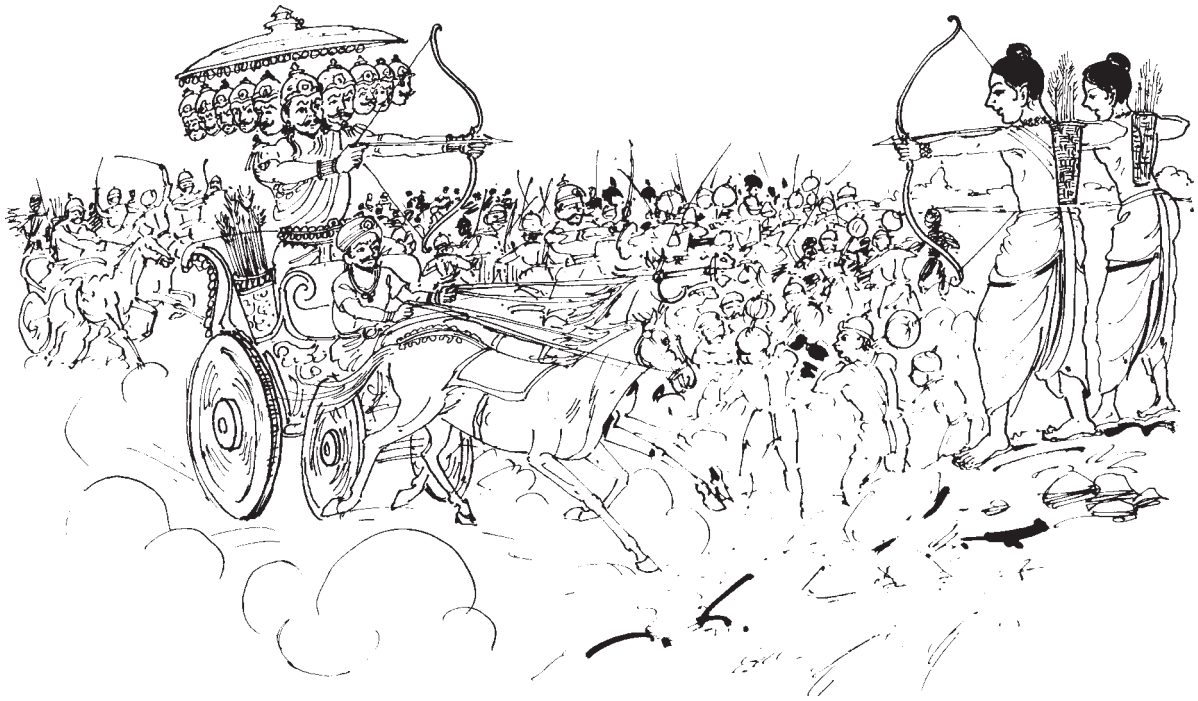

शिक्षण संकेत - ■ बच्चों की सहभागिता से कठिन शब्दों का अर्थ संदर्भ सहित वाक्यों में प्रयोग करते हुए करें। ■ कठिन शब्दों के विलोम तथा पर्यायवाची शब्द भी बताएँ। ■ रामचरित मानस, महाभारत, श्रीमद् भगवद् गीता के संदर्भ स्पष्ट करें। ■ श्रीराम-रावण युद्ध के बारे में बातचीत करें।

तत्वों (शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि गुण) का संदर्भ देकर कहते हैं कि इन सद्‌गुण रुपी धर्मरथ पर आरूढ़ होकर प्रत्येक बाह्य एवं आन्तरिक शत्रु को जीता जा सकता हैं। काव्यांश के आरंभ में राक्षस सेना के विशाल और भयंकर स्वरूप का दिग्दर्शन है वहीं वानर और भालुओं के उत्साह उमंग और वीरता का भी मनोरम चित्रण हैं। इस काव्यांश में श्रीराम द्वारा वर्णित धर्मरथ के रूपक में जिस युध्द गीता के सूत्रों को प्रतिपादित किया गया है वे श्रीमद् भगवद् गीता के सार तत्व की ओर भी संकेत करते हैं।)

चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा॥
बिबिधि भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना॥
चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे॥
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया॥
अति विचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेनु जनु साजी।
चलत कटक गिसिंधुर दगही छुमति पयोधि कुधर डगमगहीं॥
उठी रेनु रबि गयउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई॥
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई॥
केहरि नाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं॥
कहइ दसासन सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा॥
हौं, मारिहऊँ भूप द्वौ भाई। अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई॥
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई॥

छं.- **धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।**
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं॥
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं॥

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक काव्यांश का अर्थ स्पष्ट करें। ■ युद्धवर्णन के समय वीर रस तथा धर्मरथ के वर्णन के समय शांत रस के भाव स्पष्ट करें। ■ अनुप्रास एवं उपमा तथा अन्य अलंकारों की ओर ध्यान आकर्षित करें। ■ विभिन्न महामानवों के गुणों पर चर्चा करें।

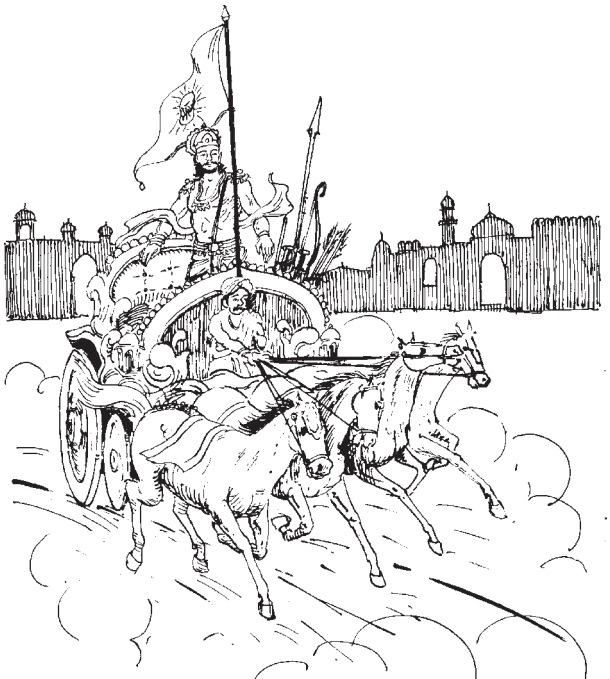

दो.- **दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि।**
भिरे बीत इत रामहि उत रावनहि बखानि॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमन अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अबेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्मरथ अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें।।

दो. **महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।**
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनि प्रभु बचन बिभीषण हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥

-तुलसीदास

	रथ के उपांग		धर्मरथ के उपांग
1.	दो पहिए	–	शौर्य और धर्य
2.	ध्वजा–पताका	–	सत्य और शील
3.	चार घोड़े	–	बल, विवेक, दम (इन्द्रियों को जीतना) परोपकार,
4.	डोरी	–	क्षमा, दया, समता
5.	सारथी	–	ईश्वर–भजन
6.	आयुध (ढाल, तलवार, फरसा, शक्ति, धनुष)	–	वैराग्य, संतोष, दान, बुद्धि, श्रेष्ठ, विज्ञान
7.	तरकश	–	निर्मल और अचलमन
8.	बाण	–	यम–नियम और संयम
9.	कवच	–	ब्राह्मणों और गुरु का पूजन

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

निशाचर	----------	कटक	----------
पताका	----------	गज	----------
जलद	----------	प्रेरे	----------
समर	----------	वहु	----------
पयोधि	----------	रेनु	----------
घोर	----------	प्रलय	----------
नफीरि	----------	पौरुष	----------
दसानन	----------	मर्दहु	----------
हौं	----------	कपिन्ह	----------
कराल	----------	सपच्छ	----------

बृंद ----------
बरन ----------
जूथ ----------
सूर ----------
छुभित ----------
वसुधा ----------
रव ----------
गाजहि ----------
के हरिनाद ----------
सुभट्टा ----------
भूप ----------
मर्कट ----------
नाना-बान ----------
संक ----------
जान ----------
सनेह ----------
स्यंदन ----------
दृढ़ ----------
धोरे ----------
त्रोन ----------
रिपु ----------
पद कंज ----------
आयुध ----------
जोरी ----------
वंदि ----------
आना ----------
दम ----------
रजु ----------
कोदण्डा ----------

चतुरंगिनीअनी ----------
मत्त ----------
मरुत ----------
निकाया ----------
कुधर ----------
निसान ----------
घन ----------
सहनाई ----------
उच्चरहि ----------
ठटटा ----------
दुहाई ----------
भूधर ----------
महाद्रुम ----------
निज-निज ----------
अधीरा ----------

सौरज ----------
परहित ----------
कृपाना ----------
कवच ----------
संसार रिपु ----------
पुंज ----------
मृगराज ----------
विरथ ----------
पदत्राना ----------
धीरज ----------
चाका ----------
परसु ----------
अभेद ----------

जाके	----------	ताके	----------
मिस	----------	अमन	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए-

(क) राक्षस सेना के चलने पर धरती पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(ख) कवि ने दौड़ते वानर-भालुओं की तुलना किससे की है?

(ग) श्रीराम के पराक्रम का मुख्य आधार क्या है?

(घ) धर्मरथ के दो पहिए कौन-कौन से हैं?

प्रश्न 3. शिक्षक की सहायता से सही जोड़ी बनाइए -

श्रीमदभगवद् गीता	उपनिषद
धर्मरथ (युद्ध गीता)	वेद
ऋचाएँ	महाभारत
दर्शन	रामचरित मानस

प्रश्न 4. इन प्रश्नों के उत्तर तीन से चार पंक्तियों में लिखिए -

(क) युद्ध भूमि में विभीषण ने अधीर होकर श्रीराम से क्या कहा?

(ख) श्रीराम ने विभीषण की शंका का समाधान किस प्रकार किया?

(ग) आत्म शक्ति और बाह्म शक्ति में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(घ) श्रीराम ने धर्मरथ में जोते चार घोड़े किसे कहा है?

(ङ) संसार रूपी शत्रु को किस रथ पर सवार होकर जीता जा सकता है?

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

लोभ, समकक्ष, पराक्रम, धर्मनीति, आत्मशक्ति, दुर्जय, मर्यादा

प्रश्न 2. 'सुसज्जित' शब्द में 'सु' उपसर्ग है। निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग पहचान कर लिखिए-

शब्द	**उपसर्ग**
विशेष	.....
विरथ	.....
अधीर	.....
दुर्जय	.....

प्रश्न 3. बॉक्स में कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द लिखे हैं। इनकी सही जोड़ियाँ बनाकर लिखिए -

उचित, अपेक्षा, विजय, लाभ, जीवन, सुरक्षा, पराजय, धर्म, अनुचित, मृत्यु, असुरक्षा, उपेक्षा, अधर्म, हानि।

प्रश्न 4. पाठ के आधार पर जोड़े बनाइए-

रण	–	दर्शन
युद्ध	–	रथ
मार्ग	–	सिर
धर्म	–	नीति
दस	–	कला

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-

धर्मनीति, प्रतिदिन, आत्मशक्ति, राम-रावण।

प्रश्न 6. निम्नलिखित अनुच्छेद में यथास्थान उचित विराम चिह्न लगाइए-

चरित्र का अर्थ है आचरण या चाल-चलन यहाँ आचरण का अर्थ है सद्‌गुणों का भंडार

जिस व्यक्ति के व्यवहार में सत्य, न्याय, प्रेम, मानवता, करुणा, दया, अहिंसा, त्याग आदि गुण एकत्र हो जाते हैं वह चरित्रवान कहलाता है जहाँ चरित्र की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है किस बल पर पाण्डव कौरवों पर भारी पड़े किस बल पर वनवासी राम ने लंकापति रावण को परास्त किया।

प्रश्न 7. महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो वीर।

जाकें अस रथ होई दृढ़ सुन सखा मतिधीर॥

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि विधि जितब वीर बलवाना।

(अ) उपर्युक्त छंदों के चरणों में मात्राएँ पहचान कर छन्द नाम लिखिए।

यह भी जानिए

अनुप्रास अलंकार में एक ही अक्षर/ वर्ण की बार-बार (एक से अधिक बार) आवृति होती है। यह आवृति (दुहराना) शब्दों के प्रारंभ या अन्त में हो सकती है।

शब्द के प्रांरभ में - दाख दुखी मिसरो मुरी (द, म)

शब्द के अन्त में - सौरज धीरज तेहि रथ चाका। (ज)

(ब) इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 8 निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए-

धीरज	----------	ईस	----------
सौरज	----------	बुधि	----------
सील	----------	ताकत	----------
छमा	----------	जम	----------

धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।

इस पंक्ति में भालू और वानरों को काल के समान बताया है जब हम किसी वस्तु का वर्णन करते समय उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते है तब उपमा अलंकार होता है। इसमें दो वस्तुओं की समता रूप, रंग तथा गुण में की जाती है जैसे माधवी का मुख चन्द्रमा के समान सुंदर है।

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं उपमेय, उपमान, साधारण धर्म एवं वाचक।

उपमेय - जिसकी तुलना की जा रही है। (जैसे-मुख)

उपमान – जिससे तुलना की जा रही है। (जैसे–चन्द्रमा)

साधारण धर्म – वह गुण जिसकी बराबरी की गई है (जैसे–सुन्दर)

वाचक – वह शब्द जिसके द्वारा समानता बताई गई (जैसे–समान, सम)

उत्प्रेक्षा अलंकार – जब उपमेय में भिन्नता जानते हुए भी उपमा की सम्भावना की जाती है उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मनु, मनहु, मानो, जनु, जान हु, जानो, निश्चय, मेरे जाने, इव ये शब्द या इनके पर्याय उत्प्रेक्षा के 'वाचक' शब्द हैं। उदाहरण – मानहुँ सपच्छ उड़ाहि भूधर वृंद नाना बान ते।

रूपक अलंकार – जहाँ एक वस्तु (उपमेय) दूसरी वस्तु (उपमान) में दिखाई जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है। उपमा में जहाँ समानता होती है वहीं रूप में एकरूपता होती है। उदाहरण – जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं। इसमें राम को सिंह तथा रावण को मतवाला हाथी निरूपित किया गया है।

प्रश्न 9. पाठ में आए उपमा, उत्प्रेक्षा तथा रूपक अलंकारों के अन्य उदाहरण छाँट कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1 श्रीराम द्वारा बताए गए धर्म रथ के उपांगों को सुन्दर अक्षरों में लिखकर प्रदर्शित कीजिए।

2 इस पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3 'आत्मबल सभी बलों में श्रेष्ठ है' इस कथन पर परिचर्चा कीजिए।

4 संत तुलसीदास जी की अन्य रचनाओं (ग्रथों) की सूची बनाइए तथा उनके प्रसिद्ध पद तथा नीति दोहों का संग्रह कीजिए।